OM - 19- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 12/10/2021 11:46 AM Page 1

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -24 अंक - 19 जनवरी-I-2022 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50

तपस्या की पराकाष्ठा से सम्पूर्णता तक... प्रजापिता ब्रह्मा

स्वयं ज्ञान सागर, त्रिकालदर्शी परम आत्मा ने जिन्हें आदि पुरुष प्रजापिता ब्रह्मा कहकर सम्मानित किया। अपनी दृढ़ता, पवित्रता व तपस्या के बल से जिन्होंने अनेकों को जीवन दान दिया। रूद्र द्वारा स्थापित ज्ञान-यज्ञ में जिन्होंने अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया और यज्ञ पिता बनकर यज्ञ को सफल किया। जिनकी दृष्टि दूसरों को देहभान से न्यारा कर देती थी। जो विदेही स्वरूप में रहकर इस संसार में ऐसे रहे मानो यहाँ रहते ही न हों। वे देह में रहते हुए भी ऐसे रहे मानो देह में हों ही नहीं। ऐसे महान पुरुष थे वे जिन्हें स्वयं निराकार त्रिमूर्ति शिव ने अपना माध्यम बनाया और उनके तन में प्रवेश करके सत्य ज्ञान का रहस्योद्घाटन किया। वे 93 वर्ष की आयु में अव्यक्त हुए। इतनी आयु तक सीधे चलते थे, सीधे बैठते थे और बैडमिंटन भी खेलते थे। इतनी आयु में भी वृद्धावस्था के लक्षण उनके पास नहीं फटकते थे और उनकी गति को मंद नहीं करते थे। उन्होंने पवित्रता व दिव्यता की नींव इतनी गहरी रखी जो आज उनकी राहों पर लाखों लोग आगे आये। कर्म और व्यवहार में उन्हें स्वार्थ स्पर्श तक नहीं कर सका। कुछ महानताएँ हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

महान कर्मयोगी

वे कर्म करते हुए कर्मातीत थे। कर्मयोगी केवल वे नहीं होते जो कर्मठ हों या जो समाज सेवा के क्षेत्र में कार्यरत हों। कर्मयोगी उन्हें कहा जाता है जो कर्म करते हुए भी योगयुक्त रहते हों। जिनके मन में कर्म की छाया तनिक भी न रहती हो। जो निष्काम हों तथा कर्मबंधन से मुक्त रहते हों। वे ज्ञान-मुरली सुनाने से लेकर, दो घण्टा पत्र पढ़ने व लिखने का कार्य करते थे। सारे यज्ञ में प्रतिदिन चक्कर लगाते थे। सब कारोबार का संचालन करते थे। रात्रि क्लास कराने के बाद वे सभी वत्सों के कक्ष में जाया करते थे, यह देखने के लिए कि सबके पास पर्याप्त सुविधाएं हैं, सब ठीक से आराम कर रहे हैं। सब बच्चों को सुलाकर फिर वे स्वयं सोते थे। इन सब कार्यों में उनका निर्मल पितृवत प्रेम व हल्कापन, चेहरे की मुस्कान व रमणीकता साफ देखी जा सकती थी। वे कर्म ऐसे करते थे मानो वे स्वयं कुछ न कर रहे हों, परमात्मा ही उनके द्वारा सबकुछ करा रहा हो। वे बुद्धि से सर्वदा ब्रह्मलोक में ही विचरण करते थे।

सम्पूर्ण बनने के लिए सम्पूर्ण समर्पित

राजयोग का ज्ञान परमशिक्षक से मिलते ही वे निरंतर योगयुक्त स्थिति की ओर चल पड़े। साधक जानते हैं कि साधना का मार्ग परीक्षाओं का मार्ग है, इस पर आशा व निराशा का भी दौर चलता है, माया भी अवरोध उत्पन्न करती है परंतु उन्होंने महावीर बनकर इसके लिए स्वयं को कुर्बान कर दिया।

बस एक ही लक्ष्य... निरंतर योगयुक्त रहना है, सम्पूर्ण बनना है। समय कहीं भी व्यर्थ नहीं, बातों में कहीं बाह्यमुखता या विस्तार नहीं। विष्णु समान ज्ञान में मग्न और सबकुछ समेटे हुए। अन्यत्र कहीं भी रूचि नहीं। बस अर्जुन की तरह लक्ष्य ही दिखाई देता था। इसे कहते हैं महान लक्ष्य के प्रति स्वयं को समर्पित कर देना। न और कुछ पाने की इच्छा, न और कुछ देखने व सुनने की इच्छा।

महान तपस्वी व वैराग्य सम्पन्न

जब से निराकार त्रिमूर्ति शिव ने उनके तन में प्रवेश किया था और उन्होंने महाविनाश का साक्षात्कार किया था, तब से ही वे वैराग्य की भावना से परिपूर्ण हो गये थे। धन-दौलत के प्रति उन्हें वैराग्य हो गया था। उन्हें एक ही धुन थी कि शीघ्र ही सम्पूर्ण बनकर वापिस अपने घर जाना है। ये विश्व उन्हें नष्ट हुआ सा प्रतीत होता था। वे इसे देखते हुए भी नहीं देखते थे। बस तपस्या ही तपस्या।

हम जानते हैं कि तपस्या हर व्यक्ति नहीं कर सकता। जिसमें त्याग व वैराग्य हो, जो इस विश्व से जीते जी मर गया हो, जिसका चित्त निर्विकार व शान्त हो गया हो, उसकी बुद्धि योग में स्थित होती है। बाबा को तो जन्म से ही स्थिर व दिव्य बुद्धि का वरदान मिल गया था। प्रातः तीन बजे उठकर वे गहन साधना में तत्पर हो जाते थे। अशरीरीपन व आत्मिक दृष्टि का उन्होंने बहुत अभ्यास किया था। चाहे वे खेलते हों या खाते हों, सैर कर रहे हों या बात कर रहे हों, वे निरंतर योगयुक्त रहते थे। शास्त्रों की भाषा में कहें तो वे चलते-फिरते भी समाधिस्थ रहते थे। उनकी योग-साधना पूर्णतः विश्व कल्याणार्थ थी।

नारायणी नशे में मस्त

नर से नारायण बनने के नशे में वे सदा दिखाई देते थे। उनके मुख पर भी आ जाता था कि मैं ये बूढ़ा तन छोड़कर छोटा श्रीकृष्ण बनूंगा। उनके चेहरे पर इसके हाव-भाव देखे जा सकते थे। उन्हीं के कारण प्रभु-प्रेम में मग्न रहने वालों को नारायणी नशे में रहने वाले कहा जाने लगा। एक बार वे हॉल में अकेले ही डांस कर रहे थे। दादी जानकी ने उन्हें देख लिया। वे बोले-बच्ची, बाबा को नशा चढ़ा हुआ है कि मैं भविष्य में क्या बनने वाला हूँ! उन्हें न केवल भविष्य का नशा था बल्कि अपने गॉडली स्टूडेंट होने का, प्रभु मिलन का, प्रभु के साथ व उनको रथ देने का भी नशा था।

बेफिक्र बादशाह

"पाना था सो पा लिया, अब और क्या बाकी रहा"- ये उनके दिल का गीत था, यही उनके जीवन का संगीत था। चाहे जीवन की अलौकिक यात्रा में कुछ भी आया हो, किसी ने उनको उदास, भयभीत, चिंतित या परेशान नहीं देखा। अनेक ब्रह्मा वत्स भी यज्ञ में विघ्न डालते थे, ग्लानि करने लगते थे, परंतु वे सदा यही कहते थे कि शिवबाबा बैठा है, वही यज्ञ का मालिक है, उसी की छत्रछाया हमारे सिर पर है, वह सब कुछ सम्भाल लेगा। यह नशा व निश्चय उन्हें सदा सभी गमों से दूर बेफिक्र बादशाह बनाये रखता था। वे यहीं सच्चे बादशाह, सिंह के समान निर्भय थे और उनका भविष्य में विश्व-महाराजन बनना तो तय ही था।

नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा

सम्पूर्ण गीता ज्ञान को उन्होंने अपने जीवन में उतारा था। चाहे दूसरे अध्याय का आत्म-ज्ञान व स्थिर-बुद्धि, चाहे योगयुक्त जीवन व निष्काम भाव, चाहे मनोविकारों पर विजय या सात्विक वृत्ति और अंतिम नष्टोमोहा व स्मृति स्वरूप स्थिति। ये सब उनके जीवन में साकार हुए थे।

यद्यपि उनकी धर्मपत्नी, पुत्र व पुत्री रूद्र यज्ञ में उनके साथ ही थे, परंतु कोई भी यह नहीं जान सकता था कि ये उनका लौकिक परिवार है। उन्होंने तो आत्मिक भाव धारण कर लिया था। सारा विश्व ही उनका परिवार था। वे प्रजापिता थे और सब थे उनकी संतान... जो भी स्मृतियाँ त्रिकालदर्शी परमपिता ने हमें दिलाईं, वे उनका स्वरूप बन गये थे। सभी आत्माएं हैं... अब घर जाना है... खेल पूरा हुआ... तुम मास्टर सर्वशक्तिवान हो, पूर्वज व पूज्य हो, कल्पवृक्ष के मास्टर बीज हो... इन सबका वे स्वरूप बन गये थे।